

॥ ॐ श्री रामलाल प्रभवे नमः ॥

योग योगेश्वर आनन्दकन्द सद्गुरु श्री चन्द्र मोहन जी महाराज

“ये वही ही हैं।”

अर्थात् हमारे सद्गुरु श्री चन्द्रमोहन महाराज ही हमारे परम् गुरु श्री रामलाल महाराज हैं।

हमारे अनेक ज्ञानी-ध्यानी वरिष्ठ गुरु भाइयों के अनुभव के आधार पर यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि ये वही ही हैं। भाइयों के अनुभव इस प्रकार हैं—

1. हमारे चाचा गुरुदेव बलिया निवासी आदरणीय श्री पारसनाथ जी ने एक बार हम सबके बीच अपना अनुभव सुनाया था— “मैं तो भ्रम में रह गया। इन्हें (श्री चन्द्रमोहन जी महाराज) को केवल मात्र अपना गुरु भाई ही समझता रहा लेकिन तुम लोग भ्रम में रहकर धोखा मत खाना “ये वही ही हैं।”

2. हमारे एक वरिष्ठ गुरु भाई जो सद्गुरु श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के परम लाडले एवं मुँह लगे बच्चे हैं, उन्होंने अपने अनुभव सुनाया था— “एक बार सद्गुरु भगवान अपने प्रवचन के दरम्यान अचानक यह कह बैठे कि श्री प्रभु जी यानी श्री राम लाल जी महाराज इस समय भी अपने चार शरीरों से योग प्रचार कर रहे हैं। हमारे गुरु भाई जी गुरुदेव जी के पीछे पड़ गये कि गुरु जी बताइए कि वे किस-किस शरीर से और कहाँ-कहाँ प्रचार कर रहे हैं? उनके अत्यन्त हठ करने पर गुरुदेव ने कहा— अच्छा, जाओ गुफा में ध्यान में बैठ जाओ। ध्यान में हमारे गुरु भाई को गुरुदेव ने वाराणसी में, गढ़मुक्तेश्वर में एवं वृन्दावन में योग प्रचार करते हुए दिखाया गया परन्तु चौथे शरीर से योग प्रचार गुरुदेव ने नहीं दिखाया। हमारे गुरु भाई के मन में यह जिज्ञासा हुई कि वह चौथा शरीर कौन है जिससे हमारे परम् गुरु श्री रामलाल जी महाराज योग प्रचार कर रहे हैं। उसी समय आकाश वाणी हुई— “ये ही यानी योगिराज श्री चन्द्रमोहन महाराज ही वह चौथा शरीर है जिसके द्वारा श्री रामलाल जी महाराज योग प्रचार कर रहे हैं।” हमारे भाई तत्काल ध्यान से उठे और दौड़ कर गुरु भवन में गये जहाँ हमारे गुरुदेव विराजमान थे। गुरुदेव के चरणों में सिर रखकर हमारे गुरु भाई ने कहा— महाप्रभुजी को शत् शत् प्रणाम। उनके ऐसा कहने पर गुरुजी ने कहा कि अरे! मैं तो तेरा गुरु हूँ, महाप्रभु जी नहीं। तब हमारे गुरु भाई ने कहा कि गुरुदेव आकाशवाणी की बात सत्य होती है कि असत्य? तब गुरुदेव ने कहा लल्ला! आकाशवाणी त्रिलोक में भी असत्य नहीं हो सकती। इसके बाद हमारे गुरु भाई ने ध्यान में हुई आकाशवाणी को बताया। तब गुरुदेव ने कहा— “अरे, चल अपना काम कर” ऐसा कहकर अपने को छिपा लिया।

3. एक बार हमारे एक वरिष्ठ ध्यानी गुरु भाई ने अपना अनुभव सुनाया— गुरुदेव कार में बैठ कर श्री सिद्ध गुफा से प्रचार हेतु कहीं जाने के लिए तैयार थे। सब लोग उन्हें प्रणाम करने के लिए कार के पास खड़े थे। हमारे गुरु भाई क्या देखते हैं कि गुरुदेव के स्थान पर कभी परमगुरु श्री रामलाल जी महाराज के रूप में बदल जाता है। अपने इस अनुभव को जब भाई जी ने गुरुदेव को सुनाया तो गुरुदेव ने कहा— “लल्ला! ये सब एक ही है।”

4. एक हमारे गुरु भाई जो गुरु देव जी की व्यक्तिगत सेवा में लगे रहते थे। भोजन बनाना, स्नान कराना और कपड़ा धोना इत्यादि कार्य किया करते थे। भाई जी के मन में कुछ पूछने की जिज्ञासा बराबर बनी रहती थी परन्तु संकोच वश वे पूछ नहीं पाते थे। परम् अन्तर्यामी हमारे गुरु देव एक दिन भोजन करते समय पूछा लल्ला! तुम कुछ पूछना चाहते हो क्या? भाई जी ने नकारात्मक उत्तर देते हुए अपनी जिज्ञासा प्रकट नहीं की। इसके बाद गुरुदेव ने कुछ गम्भीर मुद्रा में कहा— लल्ला! तुम हमें क्या समझते हो? गुरुदेव जी की गम्भीर मुद्रा को देखकर भाई जी ने कहा— गुरुदेव! मैं आप को सर्वज्ञ, अन्तर्यामी एवं परमगुरु श्री रामलाल जी महाराज का ही स्वरूप मानता हूँ। भाई जी की यह बात सुनकर गुरुदेव उनकी तरफ देखे और मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए भोजनालय से बाहर निकल गये।

5. जैसा कि गुरुदेव के प्रवचन एवं पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हम सभी जानते हैं कि नेपाल हिमालय पर जब हमारे परम् गुरुदेव श्री रामलालजी महाराज, अपने गुरुदेव श्री सदाशिव महाराज के पास विराजमान थे, उस समय वहाँ एक प्रश्न उठा कि संस्कार भोगकर निपटाना श्रेयस्कर है अथवा समाधि में काट कर निपटाना श्रेयस्कर है? अन्ततोगत्वा निर्णय यह हुआ कि संस्कार भोग कर निपटाना श्रेयस्कर है। इसके बाद सदाशिव महाराज ने अपने शिष्य श्री रामलाल जी को आदेश दिया कि अब तुम पृथ्वी पर जाओ और अपने संस्कारियों के संस्कार भोग कर निपटाओ। वे अनेक निर्माण काय से इस धरा-धाम पर आये और संस्कारों को भोग कर निपटाने का केवल मात्र डिमांस्ट्रेशन किया। संस्कारों को पूर्ण रूप से भोगकर निपटाने के लिए उन्हीं में श्री चन्द्र दत्त के रूप में दूसरा शरीर धारण किया। यही चन्द्र दत्त जी, बाद में श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के रूप में अन्तिम स्वाँस तक संस्कारों को भोगकर निपटाने का कार्य सम्पन्न किया।

इस प्रकार अनेकानेक अनुभवों/तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि— “ये वही ही हैं।”